(1)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - आठ

पुरुष परीक्षा (व्याख्यान-1)

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar,
Madhubani (LNMU)

Topic: पुरुषपरीक्षाक आधार पर दानवीर कथाक वैशिष्ट्य।

विक्रमादित्य नामक राजा छलाह जे उज्जयिनी नामक राजधानीमे रहैत छलाह। एक दिन कोनो वैतालिक द्वारा पठित एक श्लोक सुनलनि - दानवीर राजा बल्लाहक जय जयकार। ओ राजा ओहने महान छथि जनिक गुणगान सन्तुष्टमन ब्राह्मणलोकनि, पूर्णमनोरथ प्रसन्नचित बन्दी-लोकनि इच्छापूर्ति करैत रहैत छथि। बन्दीजनक पण्डित समुदाय ओ स्वर्णपुरस्कार प्राप्त योद्धालोकनि दिशा-दिशामे नित्य नियमित रूपें, करैत रहैत छथि। वैतालिक सतत कहलनि हमर तँ ई प्रतिज्ञा अछि वीरलोकनिक यश दिशा-दिशा विस्तार करैत रही। वैतालिक तँ संग्रामक शूरगणकेँ ललकारा दए बढ़बैछ, मदांधकेँ बाधैछ, कायरकेँ दुर्गुण देखबैछ ओ राजालोकनिक आओर विपक्षीक गुणक चर्चा करैत अछि। वैतालिक राजाकेँ इच्छा भेलनि जे देखी राजा बल्लाह गुणको केहन छथि। केहन छथि हुनक [illegible]। वैतालिक बाजल- देव! ओहि बल्लाह नामक राजाक द्वारिपर समरात्रि सोनक एक मन्दिर तैयार होइछ, प्रतिदिन ओकरा काटि-काटि ओकर सोन लऽ राजा ब्राह्मण, गुणी आ दरिद्र लोकसभमे बाँटल करैत छथि। सम्भवतः हुनका गुणगान करैत छथि। राजा बल्लाह वैतालिक! तोँ ई सत्य कहैत छैक। राजा बल्लाह - जाधरि एकर निरूपण नहि करब तावधरि तोँ एहि नगरमे रहह।

राजा अपन अन्तःपुर जाय एकान्तमे विचारय लगलाह-
बलाहक चरित्र तँ अत्यन्त आश्चर्यजनक अछि। हुनका
इच्छा लेलनि जे जाकय ई कुतूहल देखी - ई विचारि,
राज्यकभार मंत्रीलोकनिकेँ सौंपि, अपने अग्नि आ कोकिल
नामक दुनू बेतालकेँ बजाय, ओकर कान्हपर सवार भऽ
बलाहकक राजधानी गेलाह। सैनिक भेष धारण कयके
सेवा करयलनि। विक्रमादित्य द्वारिपर रहितहि, अत्यन्त
आश्चर्यजनक घटना देखलनि जे प्रतिदिन स्वर्णमन्दिर बनैत
अछि, लोकसभमे बाँटल जाइछ। सोचय लगलाह जे एता
स्वर्णमन्दिर कोना बनैछ कतय से किएक ने देखी।
एकदिन रातिमे विक्रमादित्यनामकराजा देखलनि जे राजा
बलाह अपन महलसँ बहरयलाह आ नगरसँ बाहर विदा भेलाह।
नदीतटे स्नान कयलाकबाद भैरवक पूजन कए मनुष्यक तातिसँ बारि
धड़धड़ जरैत आगिमे तप्त तेल भरल कड़ाहमे कूदि देलक।
ओ राजा अत्यन्त कष्टपूर्वक प्राणत्याग कयलक। तखन हुनक
निष्प्राण शरीर जखन तेलमे खुदबुद भय गेल, भगवती चामुण्डा
प्रत्यक्ष भय ओहि मांसके खयलनि और भगवती हुनका ओहिना
बना देलक। बलाह राजा बजलाह- हे भगवती! दान करयसँ
प्रसिद्ध पुरुष यदि याचक लोकनिक मनोरथ पूर्ण करबामे समर्थ
नहि होयत तँ मृत्युओसँ अधिक कष्टकर। हे जननी हमर
मनोरथ पूर्ण कयल जाय। देवी बजलीह- बलाह। ओहि अहाँक
द्वारिपर पहिलें जकाँ सोनक मन्दिर प्रस्तुत होअओ। ओतहि
सँ घर दिसा विदा भेलाह।

विक्रमादित्य से सब देखि सोचलनि- बेतालक
सहायें देलक। बलाह वस्तुतः दानवीर छथि जे

लोकक हेतुसँ प्रतिदिन अपन प्राण दय धर्म अर्जन करैत छथिन । इतबा पर भगवतीके क्षमामयी विधिहि।

बेतर राति विक्रमादित्य ओहि स्थानमे पहुँचलाह। स्नान कय खौलैत तेल भरल कड़ाहमे कूदि गेलाह। जरल शरीरक माँसकेँ तेल कड़कड़ा उठल, से तुरत भगवती ओतय आबि माँस खयलनि। तकर हड्डीकेँ अमृतसँ सिंचलनि। फेर बालक जकाँ उठलाह तखन इच्छा भेल भगवतीके वर दियाने उठा फेर कड़ाहमे कूदि पड़लाह। एहि प्रकारे बारंबार ओ सिंझाओल गेलाह आ पुनः कड़ाहमे कूदैत गेलाह। भगवती खुशि भेल आ बजलीह — हे विक्रमादित्य अहाँपर हम ~~प्रसन्न~~ प्रसन्न छी। तखन हम अहाँक साहससँ सन्तुष्ट भेलि छी। वर माँगू। विक्रमादित्य कहल — देवि! अहाँ जगन्माता छी, अतः प्रति वात्सल्य रखनिहार छी। बलाहक प्रतिदिन भेलते अपन आराधना कयलहुँ इतक आदिपर लोकक मन्दिर प्रत्येक रहैत रहैत। एहि प्रकारे वरदान प्राप्त कऽ विक्रमादित्य अपन राज्य फिरलाह। ओ वैतालिक सत्यवार्ता कहैत रहलनि नगर बजाय, रत्न-धन आ घोड़ा-हाथी प्रदान कय पुरस्कृत कयलनि।

Sanjit Kumar